बी.एड.महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता एवं आत्मविश्वास में अंतर का अध्ययन

Dr. sangita Tiwari(asst.prof)
IES University Ratibad Bhopal
E.mail-tiwasangita2016@gmail.com
Ph- 7509144255

सारांश–

प्रस्तुत षोध पत्र में बी.एड.महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता एवं आत्मविश्वास में अंतर जानने की जिज्ञासा से यह अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु भोपाल जिले के बी.एड. महाविद्यालय के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के 100 प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन किया गया है जिसमें महाविद्यालय के 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं को चयनित किया गया है। शोध प्रपत्र में शेधार्थी ने बी.एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता को जानने के लिए स्वनिर्मित परीक्षण का एवं आत्मविश्वास के लिए रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित व प्रमाणीकृत आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन फोनिक इंटरव्यू तथा ई–मेल द्वारा परीक्षण पत्र भरवाकर किया गया है। प्रदत्तों के विष्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– परीक्षण के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष निकाला गया प्राप्त निष्कर्ष में पाया कि बी.एड.महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता एवं आत्मविश्वास की तुलना करने पर उनके मध्य अंतर नहीं पाया गया है। इसकी विवेचना प्रस्तुत षोध पत्र में की गई है।

मुख्य शब्द– शिक्षण दक्षता, आत्मविश्वास, पारंपरिक शिक्षण पद्धति, नवाचार, आत्मनिर्भर, कौशल

प्रस्तावना – शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षणार्थी को अध्यापन कार्य में दक्ष होना आवश्यक है दक्षता का तात्पर्य किसी कार्य को करने की कुशलता से होता है शिक्षण दक्षता शिक्षण कार्य को प्रभावशाली तरीके से प्रदर्शित करती है। अर्थात यदि कोई शिक्षक शिक्षण में दक्ष है तो निश्चित रूप से वह अध्यापन कार्य में प्रभावी होगा। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने दक्षता के दस क्षेत्र निर्धारित किए है। 1. संदर्भगत दक्षता 2. संकल्पनात्मक दक्षता 3. विषयगत दक्षता 4. संप्रेषण दक्षता 5. क्रिया–कलापगत दक्षता 6. शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण दक्षता 7. मूल्यांकन दक्षता 8. प्रबंधन संबंधी दक्षता 9. अभिभावक सह कार्य दक्षता 10. समुदाय एवं अन्य संगठन सह कार्य दक्षता है।
आत्मविष्वास व्यक्ति के सौम्य कौषलों में से एक है यह एक आंतरिक षक्ति है जो प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में विद्यमान अवष्य रहती है। आत्मविष्वासी व्यक्ति कठिन एवं विपरीत समय में संयमित एवं अडिग रहते हैं वे कठिन परिस्थितियों का निर्भिकतापूर्वक सामना करते हैं और यष की प्राप्ति अपने जीवन में करते हैं। अतः कह सकते हैं कि आत्मविष्वास ही उन्हें उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा प्रायः देखा जाता है।सफल व्यक्ति में आत्मविष्वास का स्तर सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अच्छा पाया जाता है।(गोहन2009)

आत्मविष्वास का अर्थ है स्वयं पर विष्वास तथा अपने कार्य एवं क्षमता पर पूर्ण विष्वास। यदि सच कहे तो व्यक्ति के जीवन में आत्मविश्वास हीं सफलता का मूल मंत्र है । अपने ज्ञान, कौषल व कार्यो पर आत्मविष्वास से वह उच्च जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है प्रशिक्षणार्थी जीवन में आत्मविष्वास का महत्वपूर्ण स्थान है। वह जब से समाज के संपर्क में आना षुरू करता है या महाविद्यालय में प्रवेष करता है उसे प्रत्येक स्तर पर आत्मविष्वास की आवष्यकता होती है। कई बार कम आत्मविष्वास एवं षर्मीली प्रवृत्ति के कारण प्रशिक्षणार्थी तीव्र बुद्धि के बावजूद भी अपने समकक्षों से पीछे रह जाते है और ऐसा भी देखा गया है कि अध्ययन में कमजोर व्यक्ति अच्छे आत्मविष्वास के कारण अन्य गतिविधियों में अपने समकक्षों से आगे निकल जाते है। (गुरूवासप्पा2009)

आत्मविश्वास एक ऐसी आंतरिक षक्ति है जो जीवन को मार्गदर्षित करती है यह व्यक्ति को प्रेरित करती है और उसके जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित भी करती है। भारत के सातवें राष्ट♠पति रहे ज्ञानी जैल सिंह प्रायमरी स्तर तक ही

पढ़े थे परंतु अपनी कार्यनिष्ठा से देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। प्रतिभा व आत्मविश्वास प्रत्येक व्यक्ति में पाया जाता है बस व्यक्ति को अपनी क्षमता का ज्ञान होना आवश्यक है।

शोध की आवश्यकता– शिक्षा की निर्मल धारा का प्रवाह योग्य एवं मनस्वी शिक्षकों के द्वारा ही संभव हो सका है। बडी सावधानी से शिक्षकों ने शिक्षा की ज्योति को मनुष्य के कल्याणार्थ सुगम रीति से उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। यदि हम शिक्षक के बारे में इतिहास का सिंहावलोकन करें तो पाते हैं कि वैदिक काल, मध्य काल एवं आधुनिक कालो में शिक्षकों का स्थान एवं उनकी शिक्षण पद्धति अलग अलग रही है परंतु शिक्षण दक्षता का स्थान सदैव महत्व का रहा है। नए परिवेश में शिक्षा का स्वरूप बदलता जा रहा है जहां पूर्व के कालो में पारंपरिक शिक्षण पद्धति का प्रयोग होता था उसकी जगह पर अब शिक्षा में नवाचारो का प्रयोग तीव्र गति से हो रहा है। नित नवीन परिवर्तनों के कारण शिक्षा में नवाचारो का प्रयोग आज के समय की आवश्यकता बनती जा रही है। नवीन चुनौतियों का सामना करते हुए प्रशिक्षणार्थी स्वयं में शिक्षण दक्षता एवं आत्मविश्वास का विकास करें तो उन्हे व्यवसायिक रूप से कुशल एवं आत्मनिर्भर बनने में सहायक सिद्ध होगा।
प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शेधार्थी ने बी.एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता एवं आत्मविश्वास का अध्ययन फोनिक इंटरव्यू तथा ई–मेल द्वारा परीक्षण पत्र भरवाकर किया गया है।

समस्या कथन– बी.एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता एवं आत्मविश्वास में अंतर का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

1. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. बी.एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. बी.एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श का चयन एवं प्रदत्तों का विश्लेषण –

भोपाल के शासकीय एवं अशासकीय बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 100 शिक्षार्थियों (50 महिला एवं 50 पुरूष) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

प्रदत्तों के संकलन के लिए शिक्षण दक्षता अनुसूची का निर्माण एवं आत्मविश्वास के लिए (रेखा गुप्ता) द्वारा निर्मित व प्रमाणीकृत आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या व विश्लेषण–

सारणी क्रमांक 1. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	निष्कर्ष
शासकीय	50	203.44	9.64	0.76	स्वीकृत
अशासकीय	50	202.87	9.9		

स्वतंत्रता के अंश–98,सार्थकता 0.05 के स्तर पर 1.97

उपरोक्त सारणी के अनुसार शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता का मध्यमान 203.44 तथा 202.87 है। मानक विचलन 9.64 तथा 9.9 है प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जांच करने पर टी. का मान 0.76 प्राप्त हुआ है।

Lora=rk va’k 98 in dk lkFkZdrk 0-05 ds Lrj ij lkj.heku 1-97 gS tcfd izkIr Vh dk eku 0-76 gS vr% Li"V gS fd ifjdfyr Vh dk eku lkj.kh ds eku ls de gS, ftlls ;g Kkr gksrk gS fd बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में अंतर नहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी कमांक 2. बी.एड. महाविद्यालय के महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	निष्कर्ष
महिला	25	203.78	9.9	0.13	स्वीकृत
पुरूष	25	202.50	9.6		

स्वतंत्रता के अंश–48,सार्थकता 0.05 के स्तर पर 1.97

उपरोक्त सारणी के अनुसार शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी की दक्षता का मध्यमान 203.44 तथा 202.87 है। मानक विचलन 9.9 तथा 9.6 है प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जांच करने पर टी. का मान 0.13 प्राप्त हुआ है।

Lora=rk va’k 48 in dk lkFkZdrk 0-05 ds Lrj ij lkj.heku 1-97 gS tcfd izkIr Vh dk eku 0-13 gS vr% Li"V gS fd ifjdfyr Vh- dk eku lkj.kh ds eku ls de gS, ftlls ;g Kkr gksrk gS fd बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी महिला एवं पुरूष शिक्षकों की दक्षता में अंतर नहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी कमांक 3. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के आत्मविश्वास में अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	निष्कर्ष
षासकीय	50	30.76	7.30	0.54	स्वीकृत
अषासकीय	50	31.54	7.05		

स्वतंत्रता के अंष–98, सार्थकता 0.05 के स्तर पर1.97

उपरोक्त तालिका से स्प∀ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर कमषः 30. 76 तथा 31.54 है प्रमाणिक विचलन 7.30 तथा 7.05 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जाϒच करने पर टी का गणना मान 0.54 प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्रता अंष 98 पद का सार्थकता 0.05 के स्तर पर सारणीमान 1.97 है जबकि प्राप्त टी का मान 0.54 है अतः स्पष्ट है कि परिकलित टी का मान सारणी के मान से कम हैए जिससे यह ज्ञात होता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय प्रशिक्षणार्थी के आत्मविष्वास में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 4. बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के आत्मविश्वास पर लिंग के मध्य अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	निष्कर्ष
महिला	25	30.57	9.46	0.18	स्वीकृत
पुरूष	25	31.30	3.78		

स्वतंत्रता के अंश–48,सार्थकता 0.05 के स्तर पर 1.97

उपरोक्त तालिका से स्प∀ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय व अशासकीय छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमषः 30.57 तथा 31.30 है प्रमाणिक विचलन 9.46 तथा 3.78 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जा́च करने पर टी का गणना मान 0.18 प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्रता अंष 48 पद का सार्थकता 0.05 के स्तर पर सारणीमान 1.97 है जबकि प्राप्त टी का मान 0.18 है अतः स्पष्ट है कि टी का मान सारणी के मान से कम हैए जिससे यह ज्ञात होता है कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थी के आत्मविष्वास में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि बी.एड. महाविद्यालय में शासकीय एवं अशासकीय प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में अंतर नहीं है इसका अर्थ यह है कि बी.एड. महाविद्यालय में शासकीय एवं अशासकीय प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता तुलनात्मक रुप से समान है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।
2. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि बी.एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता में अंतर नहीं है इसका अर्थ यह है कि बी.एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों की दक्षता तुलनात्मक रुप से समान है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।
3. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि बी.एड. महाविद्यालय के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के आत्मविष्वास में सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि बी.एड. महाविद्यालय के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों में आत्मविष्वास तुलनात्मक रुप से समान है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।
4. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थी के आत्मविष्वास में सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि बी.एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों का आत्मविश्वास समान है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

संदर्भ सूची

- क्रो एण्ड क्रो ;1951द्ध एन इंट्रोडक्शन टू गाइडेंस, न्यूयार्क : अमेरिकन बुक कंपनी।
- गोहन, आइसेल एंड एट.आल (2009) मेटाकॉग्निषन स्टडी हैबिट एंड एटीट्यूड्स। डिजर्टेषन अबस्ट्रैक्ट इंटरनेषनलए 76 (1) 19–29प
- गीता, एस तथा विजयालक्ष्मी, ए. (2006) इंपैक्ट ऑफ इमोषनल मैच्युरिटी ऑन स्ट्रेस एण्ड सेल्फ कान्फिडेंस ऑफ एडोल्सेंट्स। जर्नल ऑफ दी इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजीए 32 (1) 69–75प
- गुरूवासप्पा. एच.डी. ;2009द्ध इंटेलीजेंस एण्ड सेल्फ कॉन्फिडेंस एंड कोरिलेषन ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स। एडुट्रैक्स टवस.8प (2009) च्च् 42.43प

- मादान, पूनम. गर्ग, सुषमा (2015–16) भारत में शिक्षा, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- शर्मा, आर.ए. (2006), शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- भटटाचार्य जी.सी.(2003), अध्यापक शिक्षा, आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर।
- कपिल, एच.के.(1981), सांख्यिकी के तत्व, आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर।